साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/16-18

वर्ष : 5, अंक : 37 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 6 मई से 12 मई 2020 पेज : 4 कीमत : 3 रुपये

क्या हवा में नाइट्रोजन डाइऑक्साइड की अधिकता से बढ़ सकती हैं कोरोनावायरस से होने वाली मौतें?

हवा में नाइट्रोजन डाइऑक्साइड का ऊंचा स्तर कोविड-19 से अधिक संख्या में होने वाली मौतों से जुड़ा हो सकता है। जर्मनी की मार्टिन लूथर यूनिवर्सिटी हाले-विटनबर्ग (एमएलयू) के एक नए अध्ययन के आंकड़ों द्वारा इस धारणा को सिद्ध किया गया है। इसके परिणाम जर्नल साइंस ऑफ द टोटल एनवायरनमेंट में प्रकाशित हुए हैं।

नाइट्रोजन डाइऑक्साइड (एनओ2) एक वायु प्रदूषक है जो मनुष्य के सांस लेने वाले मार्ग को नुकसान पहुंचाता है। एनओ2 लंबे समय से मनुष्यों में कई प्रकार के श्वसन और हृदय रोगों के लिए जिम्मेदार माना जाता है। एमएलयू के इंस्टीट्यूट ऑफ जियोसाइंसेज के डॉ. यारोन ओगेन कहते हैं कि चूंकि नोवल कोरोनावायरस सांस लेने वाले मार्ग को भी प्रभावित करता है, इसलिए माना जा सकता है कि वायु प्रदूषण और कोविड-19 से होने वाली मौतों की संख्या बढ़ सकती है। हालांकि अब तक इसकी जांच करने के लिए विश्वसनीय डेटा का अभाव रहा है।

अपने नवीनतम अध्ययन में, भूवैज्ञानिक ने डेटा के तीन सेटों को एक साथ जोड़ा है। इसमें यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ईएसए) प्रहरी 5 पी उपग्रह द्वारा मापा गया क्षेत्रीय नाइट्रोजन डाइऑक्साइड प्रदूषण का स्तर शामिल था, जो लगातार पृथ्वी पर वायु प्रदूषण की निगरानी करता है।

इस डेटा के आधार पर, उन्होंने दुनिया भर में नाइट्रोजन डाइऑक्साइड प्रदूषण की अधिकता और लंबे समय तक इसका अवलोकन किया। ओगेन ने बताया कि मैंने यूरोप में कोरोना का प्रकोप शुरू होने से पहले इस साल जनवरी और फरवरी में नाइट्रोजन डाइऑक्साइड के आंकड़े देखे।

उन्होंने अमेरिकी वेदर एजेंसी 'नोआ' के आंकड़ों के साथ अपने वायु प्रवाह के आंकड़ों को जोड़कर देखा। उन्होंने बताया कि यदि हवा का बहाव अधिक होगा, तो जमीन के पास प्रदूषक भी अधिक प्रसारित होते हैं।

हालांकि अगर हवा जमीन के पास ठहरने लगती है, तो हवा में प्रदूषक अधिक होते हैं, इस तरह की स्थिति में जब मनुष्यों द्वारा सांस ली जाती है, तो स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ जाती हैं।

इन आंकड़ों का उपयोग करते हुए, शोधकर्ता दुनिया भर में वायु प्रदूषण के उच्च स्तर और साथ ही साथ वायु के बहाव की गति के निम्न स्तर वाले हॉटस्पॉट की पहचान करने में सक्षम थे।

इसके बाद उन्होंने कोविड-19 से संबंधित मौतों के आंकड़ों की तुलना की, विशेष रूप से इटली, फ्रांस, स्पेन और जर्मनी के आंकड़ों का विश्लेषण किया। इससे पता चला कि जहां अधिक मौतें हुई थी उन क्षेत्रों में विशेष रूप से नाइट्रोजन डाइऑक्साइड का उच्च स्तर और ऊर्ध्वाधर हवा के अदला-बदली (वर्टीकल एयर एक्सचेंज) की मात्रा भी कम पाई गई थी। जब हम उत्तरी इटली, मैड्रिड और चीन में हुबेई प्रांत के आसपास के क्षेत्र को देखते हैं, इन सभी में कुछ समानताएं है- ये पहाड़ों से घिरे हैं।

ओगेन ने बताया कि इसकी और भी अधिक आशंका है कि इन क्षेत्रों में हवा की गति स्थिर रही हो और प्रदूषण का स्तर भी अधिक रहा हो। उनका विश्लेषण इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्तिगत क्षेत्रों पर आधारित है और साथ ही अलग-अलग देशों की तुलना भी करता है। ओगेन कहते हैं कि भले ही हम वायु प्रदूषण के लिए एक देश के औसत आंकड़े प्राप्त कर सकते हैं, यह आंकड़े अलग-अलग क्षेत्रों में बहुत भिन्न हो सकते हैं और इसलिए यह एक विश्वसनीय इन्डकेटर नहीं हो सकता है।

भूविज्ञानियों ने कहा कि प्रभावित क्षेत्रों में वायु प्रदूषण से वहां रहने वाले लोगों का समग्र स्वास्थ्य खराब हो सकता है, जिससे उन्हें विशेष रूप से वायरस से अत्यधिक खतरा हो सकता है। ओगेन ने कहा कि यह शोध केवल एक शुरुआती संकेत है जो वायु प्रदूषण के स्तर, वायु की गति और कोरोना के प्रकोपों की गंभीरता के बीच एक संबंध होने की ओर इशारा करता है।

रेगिस्तान की लोमड़ियों में भी फैल रही है मेंज बीमारी, वन विभाग बेखबर

ऊंटों के बाद रेगिस्तान की लोमड़ियों (डेजर्ट फॉक्स) में भी मेंज बीमारी फैल रही है। जैसलमेर के डेजर्ट नेशनल पार्क में कई लोमड़ियां मेंज से पीड़ित देखी गई हैं। डाउन-टू-अर्थ ने जब जैसलमेर वन विभाग के डीएफओ बेगाराम जाट से इस संबंध में बात की तो उन्होंने कहा कि 4 मई को ही हमें मामले का पता चला है। स्पष्ट रूप से नहीं कहा जा सकता कि लोमड़ियों में क्या रोग है? हालातों का पता लगा रहे हैं। जरूरत होने पर डॉक्टरों की टीम से भी पता कराएंगे। हालांकि जानकारों का मानना है कि ये लक्षण मेंज के ही हैं। वन विभाग को तुरंत लोमड़ियों के सैंपल लेकर लैब में भेजने चाहिए, ताकि जल्दी इलाज शुरू किया जा सके।

बता दें कि राजस्थान के रेगिस्तानी जिले जैसलमेर और बाड़मेर में कई महीनों से ऊंटों में भी मेंज बीमारी फैल रही है।

डाउन-टू-अर्थ को लोमड़ियों में फैल रहे मेंज की सूचना प्रोफेसर सुमित डूकिया ने दी। सुमित दिल्ली की जीजीएस इंद्रप्रस्थ यूनिवर्सिटी के एनीमल इकोलॉजी एंड वाइल्ड लाइफ बायोलॉजी विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। बकौल सुमित, 'मैं बीते 20 सालों से डेजर्ट पार्क में रिसर्च के सिलसिले में काम कर रहा हूं। फिलहाल मैं जैसलमेर के इस पार्क में गोंडावण की निगरानी का काम कर रहा हूं। इस दौरान ही हमें ये लोमड़ी दिखाई दी हैं। इनमें से बहुत सी लोमड़ियों की हालत ज्यादा खराब है। इनके शरीर पर बाल खत्म हो गए हैं। पहले से ही संकटग्रस्त ये प्रजाति अब मेंज के चलते मर रही हैं।'

सुमित आगे बताते हैं, 'ये काफी पुरानी बीमारी है, लेकिन ना तो वन विभाग और ना ही किसी अन्य संस्था को इस बारे में पता है। हमारे अनुमान के मुताबिक डेजर्ट पार्क की 30-35त्न लोमड़ियों में मेंज की समस्या है। इनमें से 5 से 8 फीसदी लोमड़ियों में ये समस्या खतरनाक स्तर पर है। ऐसी लोमड़ियों के शरीर के सारे बाल भी उड़ चुके हैं। शारीरिक कमजोरी और शरीर में कीड़े पड़ने पर इनकी मौत हो रही है।'

लोमड़ियों की फोटो खींचने वाले वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर राधेश्याम विश्नोई ने डाउन-टू-अर्थ से बात की। उन्होंने बताया, 'मैं बीते तीन साल से डेजर्ट फॉक्स में ये बीमारी देख रहा हूं, लेकिन इस बार बड़ी संख्या में बीमार लोमड़ी दिखी हैं। 4 मई को ही खींचे फोटो से साफ है कि समस्या कितनी गंभीर है। पोकरण के पास धूलिया गांव में इस तरह की बीमार लोमड़ी देखी गई हैं। इसके अलावा आस-पास के गांवों में तीन-चार मृत लोमड़ी भी दिखाई दी हैं।'

राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में प्रोफेसर डॉ. अनिल कटारिया से भी इस संबंध में डाउन-टू-अर्थ ने बात की। उन्होंने बताया, जंगली जानवरों में ये बीमारी फैलना बहुत ही खतरनाक संकेत हैं। मेरी नज़र में लोमड़ियों में मेंज बीमारी की यह अपनी तरह की पहली घटना है। हालांकि बीमारी की लेबोरेट्री पुष्टि नहीं है, लेकिन शुरूआती लक्षण देखने पर ये मेंज ही लग रहा है। इसके इलाज के लिए आईवरमेक्टिन दवाई दी जाती है, लेकिन जब तक लैब से रोग की पुष्टि नहीं हो तब तक कोई दवाई नहीं देनी चाहिए।'

कटारिया आगे बताते हैं, 'ऊंटों को पालने वाले उन्हें दवाई आसानी से दे सकते हैं, लेकिन ये जंगली जानवर है। इन्हें पकड़ना ही वन विभाग के सामने सबसे बड़ी चुनौती होगी। चूंकि डेजर्ट पार्क का क्षेत्रफल बहुत ज्यादा है और इसमें कई गांव भी बसे हुए हैं। इसीलिए आसानी से लोमड़ी दिखाई भी नहीं देतीं। अगर बीमारी को जल्द काबू नहीं किया गया तो पहले से संकटग्रस्त रेगिस्तानी लोमड़ियों के अस्तित्व पर बड़ा संकट आ सकता है।'

राजस्थान में सिर्फ 8 हजार लोमड़ी बची हैं

प्रदेश के वन विभाग की सालाना रिपोर्ट बताती है कि राजस्थान में अब सिर्फ 8,331 लोमड़ियां ही बची हैं। इसी संख्या में डेजर्ट फॉक्स भी शामिल हैं. हालांकि स्थानीय लोग बताते हैं कि पार्त में बमुश्किल 1500-2000 लोमड़ी ही बची हैं। 3162 किमी क्षेत्र में फैले जैसलमेर के डेजर्ट नेशनल पार्क में सबसे ज्यादा संख्या में ये रेगिस्तानी लोमड़ी रहती हैं। इसके अलावा गुजरात के कच्छ रण में भी बड़ी संख्या में ये लोमड़ी पाई जाती हैं। भारत के अलावा पाकिस्तान के रेगिस्तान में भी डेजर्ट फॉक्स पाई जाती हैं।

लॉकडाउन, 'आत्म-अलगाव' और हमारा प्रकृति प्रेम

पिछले एक महीने में दुनिया भर में काफी कुछ बदल गया है। हवा साफ हो गई है। वाहनों के आवागमन का शोर गायब हो गया है। ऑटोमोबाइल कारखाने बंद हैं। रेस्तरां भी बंद हैं। वर्तमान में कई व्यावसायिक कार्य रुके हुए हैं। गंगा और यमुना जैसी नदियां अधिक स्वच्छ पानी के साथ बह रही हैं। हम पक्षियों की कई किस्मों को देख रहे हैं और शांत सड़कों और आसमान में पक्षियों को गाते भी सुन सकते हैं। हम घर का बना खाना खा रहे हैं। मॉल और सिनेमा हॉल हमारे मानसिक पटल से अचानक गायब हो गए हैं। हमारी खरीदारी की सूची से कई महत्वहीन चीजें लुप्त हो गई हैं। चूंकि हम कम उपभोग कर रहे हैं और कम खरीद रहे हैं, इसलिए कचरे की मात्रा भी कम है। हम जीने के मौलिक और स्थायी समझ को याद कर रहे हैं। लगता है, इस वैश्विक महामारी ने हमारा संपूर्ण जीवन दर्शन ही उलट-पलट दिया है। हमारे जीवन मे कितनी ऐसी चीज़े हैं, जिनके पीछे हम बेवजह भागते रहे हैं। लेकिन दुखद पहलू यह भी है दुनिया भर में, लाखों-अरबों लोग लॉकडाउन या 'आत्म-अलगाव' में हैं।

लॉकडाउन का सकारात्मक असर सुखद अहसास दे रहा है। इसमें कोई शक नहीं है कि बहुतों को घर में रहना मुश्किल हो गया है। बहुत से लोग ऊब गए होंगे और बहुत से लोग लक्ष्यहीन महसूस कर रहे होंगे। कुछ को यह भी महसूस हो रहा होगा कि लॉकडाउन उनके व्यक्तिगत अधिकार का उल्लंघन है, जिसे जबरदस्ती घर में रहने के लिए बनाया गया है। कहीं ये हमारा प्रकृति प्रेम और वैरागी 'आत्म-अलगाव' शमशानी वैराग्य तो नहीं। घाट पर हम किसी को अंतिम विदाई दे कर यही सोचते हैं कि यह जीवन नश्वर है और हम बेकार मे ही राग रंग मे डूबे हैं। लेकिन कुछ ही दिनो के बाद ही हम वही राग द्वेष मे लिप्त हो जाते हैं।

एक ओर जहाँ हम इस बात को लेकर खुश हो रहे हैं कि प्रकृति अपने पुराने स्वरूप मे आ रही हैं, वहीं दूसरी ओर प्रकृति को पुन: कुपित करने का प्लान भी तैयार हो रहा है। चीनी की मिलें, खाद के कारखाने, कपड़े रंगने वाले यूनिट्स, प्लाइवुड की फैक्टरियां फिर से हमारी नदियों में जहर उड़ेलने के लिए बेताब हो रहे हैं। वाहनों की रफ्तार कम होने से एक छोटे से शहर मे भी हजारों लीटर पेट्रोल की खपत कम हुई है। कच्चे तेल की कीमत इतिहास में पहली बार शून्य से भी नीचे पहुंच गई है। कोई भी देश, उत्पादक देशों से तेल नही खरीद रहा है और तेल उत्पादक देश पैसे देकर भी तेल खरीदने की गुज़ारिश कर रहे हैं क्योंकि इतने तेल जो इस्तेमाल में नहीं आ रहे हैं उन्हे रखने की बड़ी समस्या खड़ी हो गयी है। लेकिन यह प्रवृत्ति अल्पकालिक हो सकती है।

विपत्ति की इस घड़ी मे जहां प्रकृति मेहरबान और शांत दिख रही है, वहीं हम सब लॉक डाउन खत्म होने का इंतज़ार कर रहे हैं। कई लोग सोशल मीडिया पर स्वच्छ और बहने वाली नदियों की तस्वीरें और वीडियो साझा कर रहे हैं। प्रदूषणकारी इकाइयों को बंद करने के कारण हमारे पर्यावरण में बहुत सुधार हुआ है। चूंकि उद्योगों, होटलों, मॉलों और बाजारों को पूरी तरह से बंद करने के कारण बिजली की मांग कम है, इसलिए जलविद्युत संयंत्र कम बिजली का उत्पादन कर रहे हैं। इस वजह से, वे नदियों में अधिक पानी छोड़ने के लिए बाध्य हैं।इसका एक प्रभाव यह है कि बड़े शहरों में भूजल की गिरावट की दर धीमी हो रही है।

केवल लखनऊ शहर में, वर्तमान संकट के दौरान 100 मिलियन लीटर रोजाना पानी की मांग में गिरावट आई है। हालांकि यह एक कड़वा सच है कि वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में इस प्रकार की गिरावट केवल महामारी के कारण देखी गई है, न कि किसी नियोजित कार्रवाई के कारण। चीन में उत्सर्जन घटकर 25त्न रह गया, जो लगभग 200 मिलियन मीट्रिक टन कार्बन के बराबर है। इस साल यूरोपीय उत्सर्जन भी पिछले साल की तुलना में लगभग 400 मिलियन टन कम हो सकता है। हालाँकि, ये परिवर्तन किसी भी तरह से स्थायी नहीं हैं क्योंकि वे नियोजित कार्यों के कारण नहीं आए हैं, बल्कि वैश्विक संकट के कारण, और अभूतपूर्व आर्थिक व्यवधान पैदा कर रहे हैं।

एक बार जब हम हमेशा की तरह व्यापार शुरू कर देंगे, तो चीजें उसी पुराने पैटर्न के साथ बिगड़ने लगेंगी। हजारों कारें हमारी सड़कों पर उतरने लगेंगी। हजारों उड़ानें दुनिया के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में पर्यटकों को ले जाना शुरू कर देंगी। हमेशा की तरह, ग्रीन हाउस गैसों को कम करने और हमारी नदियों को साफ करने के लिए सम्मेलन और बैठकें होने लगेंगी।जहां यह स्थिति पर्यावरण के लिए अच्छी साबित हो रही है, वहीं शोधकर्ता और वैज्ञानिक इस बात से भी चिंतित हैं कि सामान्य होने के बाद यह संख्या तेजी से बढ़ सकती है। यह एक ऐसी चीज है जिसे हम निश्चित रूप से नहीं चाहते हैं, हालांकि, केवल समय ही बताएगा कि हमारे लिए भविष्य में क्या झूठ है।

यह दुनिया का अब तक का सबसे बड़ा लॉकडाउन है। कई अपने परिवार के साथ नहीं हो पा रहे हैं और कई शिविरों में फंसे हुए हैं। सावधानी से लोग एक-दूसरे से दूरी बनाए हुए हैं। संक्रमण के खतरे को कम करने के लिए हर जगह लोगों को घर में रहने और दूसरों से दूर रहने के लिए कहा जा रहा है। महामारी एक अभूतपूर्व वैश्विक झटका है जो असमानता के प्रभाव को बढ़ाता है, गरीबों को सबसे कठिन मारता है। यह कितना क्रूर है कि जिन्हें पैसे कमाने के लिए घर छोड़ना पड़ता है उनकी कमाई दिल्ली, सूरत और मुंबई जैसे शहरों में स्थित है और उनके घर हज़ारों मिल दूर कहीं और हैं। और जब कोई मानव निर्मित या प्राकृतिक आपदा होती है, तो वे तुरंत अपने घरों में वापस जाने की कोशिश करते हैं।

कई वंचित वर्ग के लिए यह दोहरा बोझ है। एक तरफ, उन्हें अपनी आजीविका खो देने का बोझ उठाना पड़ता है, और दूसरी तरफ, उन्हें भोजन या पानी के बिना मीलों तक चलना पड़ता है, क्योंकि हम इस बात का हिसाब नहीं लगा पाते हैं कि वे घर, सुरक्षित और सम्मान के साथ कैसे जा सकते हैं। घर के पास आर्थिक अवसर नहीं होने पर आखिर कोई कर क्या सकता है? बुनियादी और रोज़गारपरक शिक्षा की कमी, खाने पीने से लेकर ठीक ठाक सेहत की चिंता और दैनिक जीवन की असंख्य चुनतियों से कैसे सामना कर सकता है? चूहे की दौड़ में एक आराम की ज़िंदगी कैसे हासिल कर सकता है? कैसे एक बड़ी और बुरी दुनिया में, एक जगह रहने के लिए, सीखने के लिए, अपस्किल करने के लिए, काम करने के लिए, कमाने और जीने के लिए सेट करता है।

वे लोग जो शहर के मूल निवासी निवासी हैं, और वे लोग जिन्हें पैसा कमाने के लिए घर छोड़ना पड़ता है, उनके बीच बहुत बड़ा फासला है, उन्हें बाहरी लोगों के रूप में देखते हैं। पारलौकिक मानसिकता दैनिक कमाई करने वालों को बाहरी के रूप में पहचानती है और उन्हे उसी नज़रिए से ट्रीट करती है। हम कुछ की बात नहीं कर रहे हैं। हमारे आर्थिक विकास में योगदान देने वाले लाखों प्रवासी मजदूर, हमारे शहरों में घृणित परिस्थितियों में रहते हैं, लेकिन इसे कभी भी घर नहीं बुला सकते हैं। और जब एक महामारी आती है तो उन्हें अपने बिस्तर और बंडलों को समेटना पड़ता है और वे घर से बाहर निकल जाते हैं। इस प्रकार हमारे पास आर्थिक प्रणाली है जो बाहर से आए लोगों के हाथ, पैर, पीठ और शरीर का इस्तेमाल अपार्टमेंट्स-सड़कों के निर्माण और नालों की सफाई के लिए उपयोग करती है। हमें लगता है कि इंसानों को उनके द्वारा काम करने वाले वास्तविक घंटों के लिए भुगतान करना एक उचित सौदा है।

कोरोनोवायरस महामारी हमारे दिल और दिमाग को केंद्रित कर रही है और हमारी अर्थव्यवस्था के लिए एक स्पष्ट, अभूतपूर्व और आसन्न खतरे का प्रतिनिधित्व करती है। वास्तव में इसका प्रभाव मानव पीड़ा के प्रतिज्ञात्मक वादे के साथ बीमारों और मृतकों की तेजी से बढ़ती संख्या है। कोरोना अपने साथ नकारात्मक परिणामों, भयानक बीमारी और मृत्यु की लहर लेकर आया है, लेकिन इसमें कुछ जीवन के महत्वपूर्ण सबक भी शामिल हैं। यदि कोई महामारी से बचे हैं, तो उनकी आवाज नाटकीय रूप से फीकी पड़ गई है।

विकास की अंधी दौड़ में हम पारिस्थितिकी तंत्र को 'समस्याओं' के रूप में देखने लगे हैं और इससे निपटने के लिए 'हल' करना शुरू कर दिया है, लेकिन यह दुख की बात है हमने पारिस्थितिकी तंत्र को 'समाधान' के रूप में नहीं देखा, हमने कई कनेक्शन खो दिए - कई जटिल बंधन जो सभी जीवन को बनाए रखने के लिए और हमारी सामूहिक समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण थे। स्वच्छ पानी और उपजाऊ मिट्टी हमारे विषाक्त मुक्त भोजन के लिए आवश्यक है। एक गिलास पीने के साफ पानी के लिए हमारे भूजल और नदियों को साफ होना जरुरी है। जैसे-जैसे दुनिया की आबादी 10 बिलियन की ओर बढ़ रही है, जलवायु परिवर्तन मौसम के पैटर्न को अप्रत्याशित बना रहा है, और सतत विकास सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा बनता जा रहा है।

जहां पानी ही अशुद्ध हो वहां कोरोनावायरस से बचने के लिए हाथ धोना कितना सुरक्षित है?

नावेल कोरोनावायरस (कोविड-19) से जूझने के मामले में भारत की वाहवाही हो रही है। हाथ धुलाई को लेकर चलाए जा रहे जागरूकता अभियान और उसमें बड़ी हस्तियों को भी शामिल करने जैसे प्रयासों की काफी चर्चा हो रही है। इस बीच एक चिंता सामने आ रही है कि माध्यम आय वर्ग वाले देश जैसे अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, कैरेबियन और एशिया के साथ भारत में साफ पानी की सुविधा कम लोगों को ही उपलब्ध है।

विश्वभर में निम्न अज्ड माध्यम आय वाले देश के 180 करोड़ लोग बेहद प्रदूषित पानी का उपयोग करते हैं। इन आंकड़ों का खुलासा ट्रॉपिकल मेडिसिन एंड इंटरनेशनल हेल्थ नामक पत्रिका में 2014 में छपे एक शोध से हुआ। इन देशों में लोग पानी में मौजूद सूक्ष्म प्रदूषण से ग्रस्त हैं और दक्षिणी विश्व में गंभीर किस्म का प्रदूषण पानी में पाया जाता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्टकहती है कि पूरे विश्व में तकरीबन 190 करोड़ आबादी द्वारा उपयोग किया जाने वाला जल पीने, साफ सफाई और दूसरे कामों के लायक ही नहीं होता, और इस पानी का स्त्रोत मुख्यत: भूजल है।

भारत में 6,50,000 गांवों में सफलतापूर्वक 1.64 करोड़ शौचालयों का निर्माण किया गया है। सेंटर फ़ॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट द्वारा किए गए शोध के अनुसार, मल उपचार की तकनीक सभी शौचालयों के लिए सुरक्षित नहीं है।

अफ्रीकन देशों जिनमें नाइजीरिया, यूगांडा और केन्या शामिल हैं, में ऐसी ही स्थिति देखी का सकती है। सारे देशों के पास साफ सफाई के दुरुस्त इंतजाम नहीं हैं। खुले में शौच और शौचालय में मल उपचार की अच्छी तकनीक न होने की वजह से बिना उपचारित या आधा-अधूरा उपचारित मल पानी के स्त्रोतों में जा मिलता है।

इससे भूजल और मिट्टी दोनों प्रदूषित होती है। इन देशों में ग्रामीण और कस्बाई आबादी भूजल या खुले जल स्त्रोतों पर निर्भर है जहां स्वच्छ पानी उपलब्ध नहीं है।

जलजनित रोगों में डायरिया सबसे अधिक जान लेने वाला रोग बना हुआ है जिसकी वजह से 60 प्रतिशत मृत्यु जो रही है। यह आंकड़ा पूर्व स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री जेपी नड्डा ने लोक सभा में एक सवाल के जवाब में वर्ष 2018 में पेश किया था।

हैजा, टाइफाइड और वायरल हैपेटाइटिस पानी से होने वाले अन्य रोग हैं जिससे अक्सर ग्रामीण आबादी प्रभावित होती है। पानी से होने वाली बीमारियों से होने वाली मौतों का प्रमुख कारण डायरिया है।

केंद्रीय स्वास्थ्य ब्यूरो द्वारा जारी वार्षिक प्रकाशन 2019 के नेशनल हेल्थ प्रोफाइल के अनुसार, 2017 में 1,362 और 2018 में 1,450 लोगों की इस बीमारी की वजह से मौत हो गई थी।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के पूर्व अतिरिक्त निदेशक दीपांकर साहा के अनुसार, भारत के ग्रामीण और कस्बाई क्षेत्रों में हाथ धोने का मतलब दूषित पानी का उपयोग करना है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भारत में भूजल में प्रवेश करने वाले जैविक प्रदूषक तत्व आज के समय में एक प्रमुख चिंता का विषय है।

हालांकि, यदि हाथ धोने में साबुन का इस्तेमाल हो रहा है तो यह पानी में मौजूद जीवाणु को खत्म करने में सक्षम है। साफ पानी को लोगों तक पहुंचा कर कोविड-19 जैसे बीमारियों से पुख्ता तरीके से लड़ा जा सकता है।

महानगरों के प्रदूषण पर भी कोरोनावायरस का शिकंजा!

कोरोनावायरस ने हम इंसानों के साथ-साथ प्रदूषण पर भी शिकंजा कसा हुआ है। वायरस का संक्रमण रोकने के लिए हो रहे जनता कर्फ्यू और लॉक डाउन जैसे उपायों से सड़कों पर उतरने वाले वाहनों की तादाद में खासी कमी आई है। इससे खासतौर पर वाहनों के धुएं से होने वाले नाइट्रोजन आक्साइड और पीएम 2.5 के प्रदूषण में गिरावट आई है। केन्द्र सरकार द्वारा संचालित संस्था सफर की ताजा रिपोर्ट में इसका खुलासा हुआ है।

सफर के शोध के मुताबिक वर्ष 2018 और वर्ष 2019 की तुलना में पुणे में नाइट्रोजन आक्साइड और पीएम 2.5 के प्रदूषण में 45 फीसदी, अहमदाबाद में 50 फीसदी और मुंबई में 45 फीसदी की कमी आई है।

इन शहरों में पांच मार्च से लेकर अभी तक के प्रदूषण के आंकड़ों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया। शोध के मुताबिक पांच मार्च से तेरह मार्च तक दिल्ली में भी नाइट्रोजन आक्साइड के प्रदूषण में गिरावट आने का रुख था।

प्रदूषण की स्थिति पर अलग से भी रिपोर्ट जारी की है। रिपोर्ट के मुताबिक इस दिन दिल्ली की हवा में नाइट्रोजन आक्साइड के प्रदूषण में 20 फीसदी तक कमी देखने को मिली है। सफर के मुताबिक दिल्ली एनसीआर क्षेत्र में तीन जगहों पर नाइट्रोजन आक्साइड की मात्रा में सबसे ज्यादा कमी दर्ज की गई है। मथुरा रोड पर इस दौरान 46 फीसदी, दिल्ली यूनिवर्सिटी क्षेत्र में 48 फीसदी और नोएडा क्षेत्र में 50 फीसदी तक की कमी नाइट्रोजन आक्साइड के प्रदूषण में रिकार्ड की गई। इसी प्रकार, मुंबई में 30 फीसदी और पुणे में 20 फीसदी तक की गिरावट दर्ज की गई। अहमदाबाद में इस दौरान सबसे ज्यादा 53 फीसदी तक की गिरावट आई।

पता हो कि दिल्ली जैसे शहर में होने वाले कुल प्रदूषण में 41 फीसदी के लिए वाहनों के धुएं को जिम्मेदार माना जाता है। इसी के चलते प्रदूषण की रोकथाम के लिए वाहनों की संख्या को सीमित करने जैसे उपायों को शामिल किया जाता रहा है। प्रदूषण रोकने के लिए दिल्ली सरकार की ओर से सम-विषम जैसी योजनाएं भी लागू की जा चुकी हैं। हालांकि, दोपहिया वाहन और टैक्सी में चलने वाले वाहनों को छूट देने के चलते इस बात का सही-सही अंदाजा लगाना मुश्किल रहा है कि इससे प्रदूषण में कितनी गिरावट आई थी। इससे पूर्व चीन में भी कोरोना वायरस के सबसे ज्यादा प्रभाव के दिनों में नाइट्रोजन ऑक्साइड के प्रदूषण में भारी कमी आने का खुलासा किया गया था। इस संबंध में नासा की ओर से सेटेलाइट की तस्वीरों को भी जारी किया गया था। वहां भी वाहनों की रफ्तार थमने और फैक्टरियों को बंद करने से नाइट्रोजन आक्साइड के प्रदूषण में खासी कमी आई थी। यूं तो वाहनों के धुएं में तमाम किस्म के खतरनाक प्रदूषक होते हैं। लेकिन, यह वातावरण में होने वाले नाइट्रोजन आक्साइड और पीएम 2.5 के प्रदूषण के लिए मुख्यतौर पर जिम्मेदार माना जाता है। वातावरण में नाइट्रोजन आक्साइड के प्रदूषण के लिए इसे 60 से 80 फीसदी तक जिम्मेदार माना जाता है जबकि पीएम 2.5 कणों के प्रदूषण के लिए वाहनों के धुएं को 35 से 50 फीसदी तक जिम्मेदार माना जाता है। ये दोनों ही प्रदूषक इंसान की सेहत के लिए बेहद हानिकारक माने जाते हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008